900

1-7-18

रविवार

आत्मा

एकान्त मे बैठकर क्यो नही हम जानने का प्रयास करते की "मै कौन हु।"

बाबा स्वामी
1-7-18

१०।

2.7.18

सोमवार

ꕥ आत्मा ꕥ

अपने आप को ही
एकान्त मे रहकर
पुछो "मै कौन हु" यह
आपको आपके भितर
ले जायेगाँ -

बाबास्वामी
2-7-18

१०२
3.7-18
मंगलवार

आत्मा

आप जब सब कुछ
करके थक जाते है।
तब हम "भितर" की
यात्रा करते है।

ऑबारस्वामी
3.7.18

903

4-7-18

बुधवार

❀ आत्मा ❀

भितर की यात्रा का
मार्ग केवल जाने का
वापस "आने" का
नहीं

बाबास्वामी
4-7-18

904

5.7.18

गुरुवार

आत्मा

भितर जाने पर ही "सत्य" के दर्शन होते है,

बाबास्वामी
5.7.18

905

6-7-18

शुक्रवार

❀ आत्मा ❀

जिस सत्य को हम परमात्मा मान कर बाहिर खोज रहे थे। वह तो "भितर" ही है।

बाबार-वामी
6-7-18

906

7-7-18

शनीवार

आत्मा

सर्वश्रेष्ठ उपासना पद्धती वह है, जो 'भितर' जाने का मार्ग दिखाये

बाबास्वामी
7.7.18

907

8-7-18

रविवार

आत्मा

सभी उपासना की पद्धतीय बाहर का ही "मार्ग" दिखाती है।

बाबा स्वामी
8.7.18

१०४

9.7.18

सोमवार

आत्मा

बाहर आने का प्रवाह तो "जन्म" से प्रारंभ हो जाता है।

बाबार-वाणी
9.7.18

909

10.7.18

मंगलवार

आत्मा

जन्म होते ही है, हम
अपनी "माँ" को देखते
है। और फिर चिन्तन
की बाहर की यात्रा ही
प्रांरभ हो जाती है।

बाबास्वामी
10.7.18

९१०

11-7-18

बुधवार

आत्मा

इस बाहर की ओर देखना मनुष्य का "स्वभाव" बन जाता है।

आबारवामी
11-7-18

911

12.7.18

गुरुवार

आत्मा

हम अपने स्वभाव के कारण "परमात्मा" को भी बाहर ही देखते हैं।

बाबास्वामी
12.7.18

912

13.7.18

शुक्रवार

आत्मा

जीवन भर बाहर ही "खोजते" रहते है, मानते रहते है, जब की वह बाहर है ही नहीं.

बाबास्वामी
13-7-18

913

14.7.18

शनीवार

ꕥ आत्मा ꕥ

"परमात्मा" हमारे ही भितर है, वह भितर है, इसलीये हम जिवीत है।

बाबास्वामी
14.7.18

914

15.7.18

रविवार

आत्मा

"परमात्मा" के विरोध में हम जो कार्य करते है। वह सदैव "छिपा" कर ही करते है।

बाबास्वामी
15/7/18

915

16.7.18

सोमवार

आत्मा

किसी की भी "कब्र"
पर बना हुआ "घर"
उसको "सुखी" नहीं
कर सकता है,

बाबास्वामी

16/7/18

916

17.7.18

मंगलवार

❀ आत्मा ❀

परमात्मा का दुसरा नाम "प्रेम" है, तो प्रेम से डर कैसा

बाबास्वामी
17.7.18

917

18-7-18

बुधवार

❀ आत्मा ❀

जब भीतर डर हो-
तो "परमात्मा" से-
भी डर होगा-महसूस

बाबास्वामी-
18-7-18

९१९

20.7.18

शुक्रवार

❀ आत्मा ❀

निर्वीचार स्थिती मे
ही हमारा संमन्ध
"परमात्मा" से होता है;

बाबास्वामी -
20|7|18

920

21.7.18

शनीवार

❀ आत्मा ❀

"आत्म सुख" और "परमात्मा" दोनो ही हमारे ही भितर है,

बाबास्वामी

921
22.7.18
रविवार

ꕥ आत्मा ꕥ

"आत्म सुख" और "परमात्मा" दोनो ही केवल वर्तमान मे रहकर ही मीलते है।

बाबास्वामी
22/7/18

23.7.18

सोमवार

❀ आत्मा ❀

"आत्मसुख" और "परमात्मा" दोनो ही अनुभूतीया है।

बाबा स्वामी
23.7.18

923

24.7.18

मंगलवार

❀ आत्मा ❀

"<u>अनुभुती</u>" सदैव ही
वर्तमान मे रहकर
ही प्राप्त होती है।

बाबास्वामी
24.7.18

25.7.18

बुधवार

❀ आत्मा ❀

हम अपना अवलोकन करे हम "वर्तमान" मे कितने रहते है,

बाबा स्वामी

25/7/18

26.7.18

गुरुवार

❀ आत्मा ❀

"वर्तमान काल" मे रहना ही परमात्मा के साथ रहना है।

बाबास्वामी
26/7/18

126

27.7.18

शुक्रवार

❀ आत्मा ❀

जो क्षण बीत गया वह
क्षण आपके "हाथ" मे नही
होता है,

बाबास्वामी
27.7.18

927

28.7.18

शनिवार

❀ आत्मा ❀

जो क्षण आने वाला है, वह कैसा होगा। वह आपके 'हाथ' मे नही होता

बाबास्वामी
28/7/18

928

29.7.18

रविवार

आत्मा

इस लीये केवल और
केवल "वर्तमान" का
क्षण ही आपके हात
मे है।

ज्ञानस्वामी
29|7|18

929

30.7.18

सोमवार

❀ आत्मा ❀

वर्तमान के प्रत्येक क्षण को "आनंद" के साथ जियो

बाबास्वामी
30/7/18

930

31.7.18

मंगलवार

आत्मा

पता नहीं कौनसा
क्षण हमारे जिवन
का "आखरी क्षण"
हो।

बाबास्वामी
31/7/18